पक्षधर

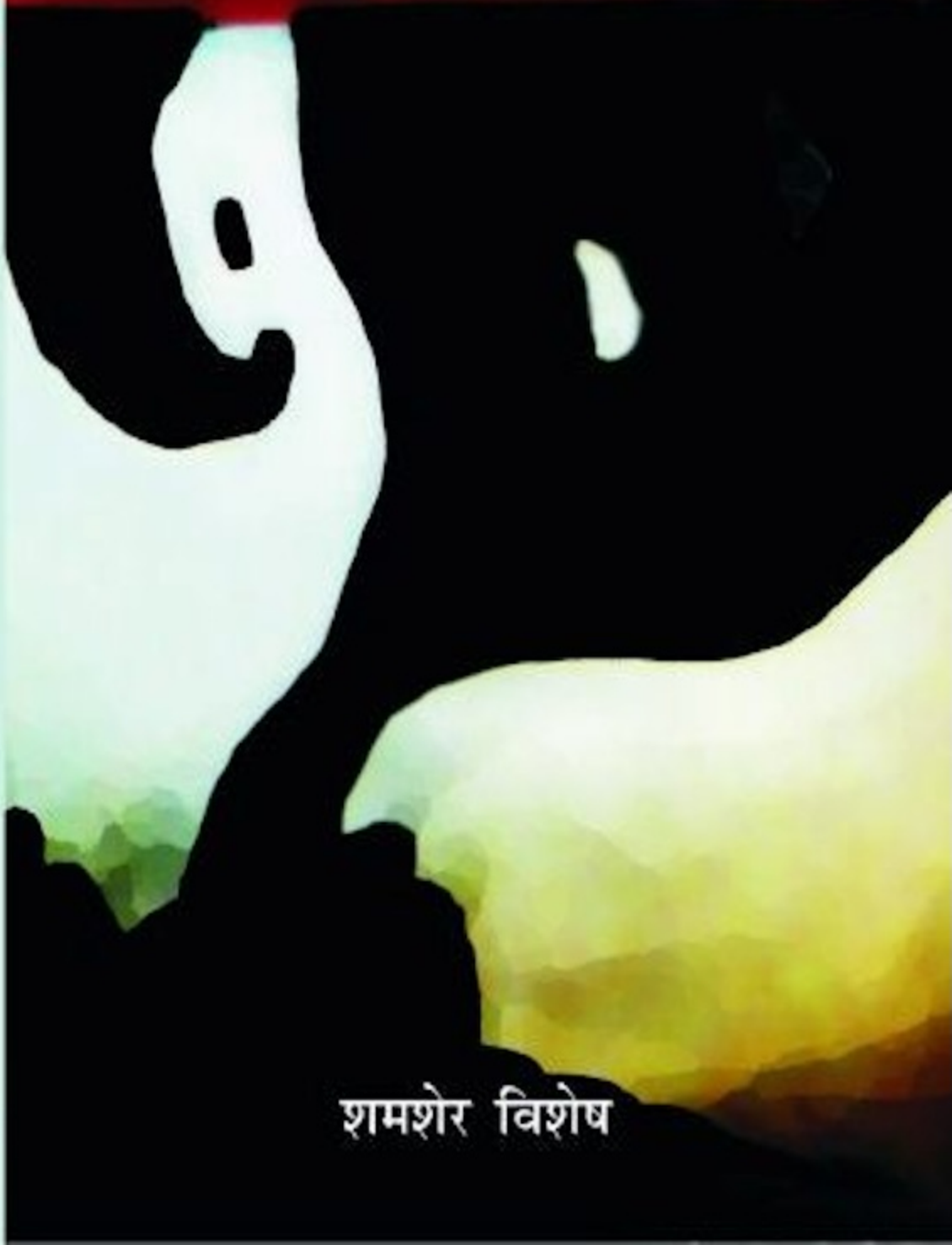

शमशेर विशेष

पक्षधर

11

संस्थापक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

अंक–11 जुलाई, 2011

संपादक

विनोद तिवारी

सहायक संपादक

तेजभान

अक्षर संयोजन

कॉम्पैक्ट प्रिन्टर्स
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : सुरेन्द्र राजन

मूल्य

एक प्रति : 50 रुपये

सदस्यता

चार अंकों के लिए : 200 रुपये
संस्थाओं के लिए : 300 रुपये
पंचवार्षिक : 500 रुपये
दस वार्षिक : 1000 रुपये
आजीवन : 2500 रुपये

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक विनोद तिवारी द्वारा बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव, स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033 से प्रकाशित और दिव्या ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-96 से मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

संपादकीय संपर्क

बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव
स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033
फ़ोन : 011-27240496
मो. : 9560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

PAKSHDHAR
A Literary Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi
ISSN : 2231-1173

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त।

समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

अनुक्रम

संपादकीय

टूटी हुई बिखरी हुई कुछ टीपें 5

एक कवि : एक राग

दस कविताएँ/ **मंगलेश डबराल** 11

शमशेर विशेष

मार्क्सवाद आधुनिक भारत के लिए गीता और कुरान है/ **शमशेर बहादुर सिंह** 21

मैं एक नज़्म हूँ/एक दोहा हूँ—शमशेर/ **ए. अरविंदाक्षन** 29

हक़ीक़त को लाये तख़ैय्युल के बाहर/ **कृष्णमोहन** 34

शमशेर : कुछ राग, रंग और स्ट्रोक/ **रोहिताश्व** 46

लंबी कविता

सांस्कृतिक शून्य और महान प्रतिभाओं से खाली
समय में : फ़िलहाल साँप कविता/ **चंद्रकला त्रिपाठी** 63

फ़िलहाल साँप कविता/ **निशान्त** 69

आलेख

मार्क्स के निषेधादेश/ **याक दरीदा** 92

उन्नीसवीं सदी का भारतीय पुनर्जागरण : यथार्थ या मिथक/ **नामवर सिंह** 132

रवींद्रनाथ का अंतरराष्ट्रीयतावाद/ **शंभुनाथ** 151

व्याख्यान

हिन्दी राष्ट्रवाद और आधुनिक हिन्दी के बनने की प्रक्रिया/ **आलोक राय** 159

कविता

सात कविताएँ/ **पंकज चतुर्वेदी** 166

तीन कविताएँ/ **अनुज लुगुन** 181
तीन कविताएँ/ **अवधेश प्रधान** 188

लंबी कहानी

पोट्टम, हरे पत्ते और दिल्ली की वह उमस भरी शाम/ **उमा शंकर चौधरी** 192

श्रद्धांजलि

कमला प्रसाद : एक अंतिम स्मृति/ **राजेंद्र शर्मा** 213
वे मशाल और मिसाल बन कर जिए/ **वाचस्पति** 218
पाँच अनूदित कविताएँ/ **चंद्रबली सिंह** 222

नया वरक़

उस्मान खान की कविताएँ : उदासीनता नहीं उदासी/ **आशुतोष कुमार** 231
छः कविताएँ / **उस्मान खान** 234

पुस्तक समीक्षा

सतह से उठती ऋषिकल्प मनुष्यता/ **नवलकिशोर** 243
उम्मीद जगाती ग़ज़लें/ **अमरनाथ** 251
प्रेम और बलिदान का महाकाव्यात्मक आख्यान/ **सूरज पालीवाल** 255
दलित-कहानी की उपलब्धि/ **बजरंग बिहारी तिवारी** 260

टूटी हुई बिखरी हुई कुछ टीपें

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं पर बात करने लिए कहाँ से शुरू किया जाए, मेरे जैसे कविता की सामान्य समझ रखने वाले पाठक के लिए यह एक मुश्किल कार्य है। कवि शमशेर रिझाते हैं, आकर्षित करते हैं, पास बुलाते हैं, आत्मीय राग में सराबोर करते हैं। पर, ज्योंही आप इस नशे में डूबकर बड़बड़ाने की, कुछ कहने की, अर्थ और व्याख्या करने की कोशिश करते हैं आप खुद बजने लगते हैं और एक सीमा के बाद खुक्ख हो जाते हैं। बचे रह जाते हैं—'केवल प्रलाप/ केवल मैं और आप/ अनाप-शनाप/' शमशेर को लगातार पढ़ते हुए अपनी डायरी में मैंने उनकी कविताओं पर छोटी-छोटी टीपें, कुछ-सूत्र, कुछ भाव, कहीं-कहीं कोई विचार टाँके हैं। यहाँ, अपनी टूटी हुई बिखरी हुई शक्ल में वही टीपें आपके सामने रख रहा हूँ। इस विवश समर्पण के साथ कि 'कविताओ! तुम चारों तरफ से मुझसे लिपटी हुई हो/और मैं तुम्हारे व्यक्तित्व के मुख में/आनंद का स्थायी ग्रास...हूँ...मूक।'

× × ×

शमशेर के साथ यह अब तक चला आ रहा है कि कोई उन्हें छायावाद से जोड़ता है तो कोई प्रगतिवाद से, कोई प्रयोगवाद से तो कोई नई कविता से। उर्दू काव्य परम्परा और अंग्रेजी काव्य-प्रभाव में भी उन्हें समझने-परखने की कोशिशें हुई हैं। शमशेर के एक अध्येता ने तो बक़ायदा एक सूत्रीकरण किया है—''ब्राउनिंग से एकालाप, एज़रा पाउण्ड से अनुकरणात्मक ध्वनि चित्र, ग़ालिब से संकेत-धर्मिता, निराला से नाटकीयता, कमिंग्स से शब्दों और पंक्तियों का अंतराल आदि लेकर उन्होंने सभी को जैसे अपने यहाँ मिला दिया है।'' गोया शमशेर कविता की जगह कोई सौन्दर्य वर्द्धक रसायन तैयार कर रहे हों। क्या यह शमशेर द्वारा प्रयुक्त उस 'विलयनवादी काव्य' की सतही समझ से उपजा अर्थग्रहण तो नहीं, जिसमें शमशेर ध्वनित, अध्वनित, स्व, पर, आदि, अनादि, इत्यादि सब कुछ को समो लेना चाहते हैं—फ़क़त।

× × ×

—एक साँचा है, उस साँचे में आप फिट हो जाइए।

—हर एक के पास एक साँचा है। राजनीतिज्ञ, प्रकाशक,...शिक्षा संस्थानों के गुरु लोगों के पास।

यह लॉबी, वो लॉबी।
रूस के पीछे। नहीं अमरीका के।
नहीं चीन के। अजी नहीं, अपने घर के
बाबाजी के। इस झंडे के उस झंडे के।
...लाल, नहीं भगवा, नहीं काला, नहीं सफ़ेद...
लेखक एक बच्चा है
उसकी ऊँगली पकड़ो। अगर वह चल सकता है, तो।